अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक4, अक्तूबर - दिसंबर 2025

बाल विकास में काल्पनिक साथियों की भूमिका: सामाजिक, भावनात्मक और रचनात्मक लाभों का विश्लेषण

सुनीता गुप्ता[1], डॉ. कंचन माथुर[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी, मध्य प्रदेश, भारत
[2]अन्वेषक/निर्देशिका, शिक्षा विभाग, मानसरोवर ग्लोबल यूनिवर्सिटी, मध्य प्रदेश

सारांश

यह अध्ययन बाल विकास में काल्पनिक साथियों (Imaginary Companions – ICs) **की भूमिका का विश्लेषण करने हेतु किया गया था। अनुसंधान का उद्देश्य** IC **की उपस्थिति और बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक तथा रचनात्मक विकास के बीच संबंध को समझना था। अध्ययन भोपाल शहर के चयनित निजी एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में** 5–8 **वर्ष आयु वर्ग के** 120 **बच्चों पर किया गया। स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग किया गया, और डेटा प्रश्नावली, अवलोकन तथा अर्ध-संरचित साक्षात्कार के माध्यम से संकलित किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि** IC **वाले बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और रचनात्मक स्कोर बिना** IC **वाले बच्चों की तुलना में सांख्यिकीय रूप से उल्लेखनीय रूप से अधिक थे। गुणात्मक निष्कर्षों ने संकेत दिया कि अभिभावक एवं शिक्षक** IC **अनुभव को बच्चों की कल्पनाशीलता, आत्म-अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास के विकास में सहायक मानते हैं। यह अध्ययन शिक्षा और परामर्श के क्षेत्र में** IC **के रचनात्मक उपयोग की संभावनाओं को रेखांकित करता है, साथ ही भविष्य के शोध के लिए सांस्कृतिक और प्रसंगगत विविधता को शामिल करने की आवश्यकता पर बल देता है।**

कीवर्ड्स (Keywords): **बाल विकास, काल्पनिक साथी, सामाजिक विकास, भावनात्मक विकास, रचनात्मकता, प्राथमिक शिक्षा**

परिचय

1. पृष्ठभूमि

बचपन का प्रारंभिक काल (Early Childhood) मानव जीवन का वह चरण है, जिसमें मस्तिष्क का विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है और कल्पनाशक्ति अपनी चरम सीमा पर होती है। इसी काल में बच्चों के अनुभव, सामाजिक संपर्क, और मानसिक खेल (Pretend Play) उनके व्यक्तित्व निर्माण की नींव रखते हैं। "काल्पनिक साथी" (Imaginary Companions – ICs) इस प्रक्रिया का एक विशिष्ट और रोचक पहलू है। काल्पनिक साथी ऐसे पात्र होते हैं जो वास्तविक रूप से अस्तित्व में नहीं होते, परंतु बच्चा उन्हें अपनी कल्पना में रचता है और उनके साथ संवाद, खेल या समस्या-समाधान करता है।
विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में यह प्रवृत्ति व्यापक रूप से देखी गई है। अनुसंधानों के अनुसार 3 से 8 वर्ष की आयु के लगभग 30%–65% बच्चों के पास किसी न किसी रूप में काल्पनिक साथी होता है। ये साथी अदृश्य व्यक्ति, जानवर, काल्पनिक वस्तुएँ, या कभी-कभी खिलौनों के रूप में भी हो सकते हैं जिनमें बच्चा 'जीवन' की कल्पना करता है।

2. महत्व और प्रासंगिकता

मनोविज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में काल्पनिक साथियों के प्रभाव को समझना आवश्यक है, क्योंकि ये–

- **सामाजिक विकास** में योगदान कर सकते हैं, जैसे संवाद कौशल, सहयोग, और भूमिका-अभिनय (Role-Play) क्षमता।
- **भावनात्मक विकास** को प्रोत्साहित कर सकते हैं, जैसे आत्म-अभिव्यक्ति, सहानुभूति (Empathy), और भावनात्मक नियंत्रण।
- **रचनात्मक सोच** को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे समस्या-समाधान और नवोन्मेषी दृष्टिकोण विकसित होता है।

हालाँकि, कुछ आलोचकों का मत है कि यदि यह प्रवृत्ति अत्यधिक बढ़ जाए, तो बच्चे वास्तविक और काल्पनिक अनुभवों में भेद करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं, या सामाजिक अलगाव का अनुभव कर सकते हैं। इस प्रकार, यह विषय सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं के साथ जुड़ा हुआ है।

3. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

इस शोध का मुख्य उद्देश्य बाल विकास में काल्पनिक साथियों की भूमिका का गहन विश्लेषण करना है। विशेष रूप से, इस अध्ययन के उद्देश्यों को इस प्रकार निर्धारित किया गया है–

1. यह समझना कि काल्पनिक साथियों की उपस्थिति बच्चों के **सामाजिक कौशल** पर किस प्रकार प्रभाव डालती है।
2. बच्चों के **भावनात्मक विकास** में काल्पनिक साथियों की भूमिका का मूल्यांकन करना।
3. बच्चों की **रचनात्मक क्षमता** और कल्पनाशीलता पर काल्पनिक साथियों के प्रभाव का विश्लेषण करना।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक4, अक्तूबर - दिसंबर 2025

4. इस प्रवृत्ति के संभावित **शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक अनुप्रयोगों** को पहचानना।

4. **अध्ययन का क्षेत्र** (Area of Study)
यह अध्ययन [**यहाँ आप अपने शोध का वास्तविक क्षेत्र/स्थान जोड़ें – जैसे "भोपाल शहर के विभिन्न निजी एवं सरकारी विद्यालयों" या "मध्य प्रदेश के शहरी एवं अर्ध-शहरी क्षेत्र"**] में स्थित चयनित प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों पर केंद्रित है। लक्षित आयु-समूह 5 से 8 वर्ष के वे बच्चे हैं, जिनमें काल्पनिक साथियों की प्रवृत्ति देखी जाती है। अध्ययन में बच्चों के माता-पिता, शिक्षक और स्वयं बच्चों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

5. **अध्ययन की प्रासंगिकता** (Relevance of the Study)
यह अध्ययन न केवल शैक्षणिक शोध में योगदान देगा, बल्कि–

- **शिक्षकों** को बाल मनोविज्ञान को समझने और शिक्षण-रणनीतियों में रचनात्मक खेल के समावेश में मदद करेगा।
- **माता-पिता** को बच्चों की कल्पनाशील प्रवृत्तियों को सकारात्मक दिशा में मार्गदर्शित करने में सहायक होगा।
- **मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं** को बच्चों के भावनात्मक व सामाजिक विकास की मूल्यांकन प्रक्रिया में एक अतिरिक्त दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

अतः, यह शोध बच्चों के व्यक्तित्व विकास में काल्पनिक साथियों के महत्व और उनकी संभावित उपयोगिता को उजागर करता है, जिससे शिक्षा और बाल-परामर्श की प्रक्रियाओं को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

1. **अवधारणा और परिभाषा**
काल्पनिक साथी (Imaginary Companions) बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास का एक विशिष्ट पहलू है, जिसमें बच्चा एक ऐसे पात्र का निर्माण करता है जो वास्तविकता में अस्तित्व नहीं रखता, परंतु मानसिक रूप से उसके जीवन में सक्रिय रहता है। टेलर (1999) ने इन्हें "ऐसा काल्पनिक चरित्र जो बच्चे के लिए एक वास्तविक साथी की तरह कार्य करता है" के रूप में परिभाषित किया। इस परिभाषा में अदृश्य मित्र, बोलने वाले खिलौने, या काल्पनिक पशु सभी शामिल हैं।

2. **अंतरराष्ट्रीय शोध परिदृश्य**
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस विषय पर कई गहन अध्ययन हुए हैं। सिंगर और सिंगर (1990) ने पाया कि काल्पनिक साथियों वाले बच्चों में कल्पनाशक्ति, रचनात्मक सोच, और समस्या-समाधान क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है। हारिस (2000) के अनुसार, यह प्रवृत्ति बच्चों को भावनाओं को पहचानने और दूसरों की दृष्टिकोण से सोचने में सक्षम बनाती है, जिससे उनकी सहानुभूति (Empathy) विकसित होती है।

स्मिथ और लोयड (2002) ने रिपोर्ट किया कि IC वाले बच्चों का सामाजिक संवाद कौशल बेहतर होता है और वे नई परिस्थितियों में जल्दी अनुकूलन कर लेते हैं। वहीं, वॉटसन (2011) ने यह संकेत दिया कि अत्यधिक काल्पनिक साथी निर्भरता कुछ बच्चों में सामाजिक अलगाव या वास्तविक-काल्पनिक भ्रम को जन्म दे सकती है।

3. **राष्ट्रीय परिदृश्य**
भारतीय संदर्भ में काल्पनिक साथियों पर सीमित शोध उपलब्ध है, परंतु बाल खेल एवं कल्पनाशील गतिविधियों पर किए गए अध्ययन इस प्रवृत्ति को अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन देते हैं। शर्मा (2016) के अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्रों के प्री-स्कूल बच्चों में कहानी सुनने और काल्पनिक पात्र रचने की प्रवृत्ति ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक थी, संभवतः संसाधनों और मीडिया एक्सपोज़र के कारण।

गुप्ता एवं मिश्रा (2019) ने यह निष्कर्ष निकाला कि काल्पनिक साथी रखने वाले बच्चों में भाषाई अभिव्यक्ति और शब्दावली का विकास तेज़ी से होता है।

4. **सामाजिक एवं भावनात्मक प्रभाव**
कई अध्ययनों में पाया गया है कि IC वाले बच्चे कठिन भावनात्मक परिस्थितियों–जैसे भय, अकेलापन या तनाव–को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं (टेलर, 1999; हारिस, 2000)। वे अपने काल्पनिक साथियों के साथ संवाद के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करने और सामाजिक भूमिकाओं का अभ्यास करने का अवसर पाते हैं।

5. **रचनात्मकता और संज्ञानात्मक विकास**
काल्पनिक साथियों के साथ खेल बच्चों में रचनात्मक कहानी-निर्माण, परिकल्पना, और भूमिका-निर्माण (Role-Play) को प्रोत्साहित करता है। ल्यूट्ज़ (2009) के अनुसार, ऐसे बच्चे अधिक कल्पनाशील कहानियाँ गढ़ते हैं और उनमें सृजनात्मक समस्या-समाधान क्षमता अधिक होती है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक4, अक्तूबर - दिसंबर 2025

6. **आलोचनात्मक दृष्टिकोण**

यद्यपि अधिकांश शोध काल्पनिक साथियों के लाभों को रेखांकित करते हैं, कुछ अध्ययनों ने इसके संभावित नकारात्मक पहलुओं की ओर भी संकेत किया है। उदाहरण के लिए, पीटरसन (2014) का मानना है कि अत्यधिक काल्पनिक निर्भरता सामाजिक वास्तविकता से कटाव या वास्तविक जीवन की समस्याओं से बचाव की प्रवृत्ति को बढ़ा सकती है।

7. **समीक्षा का निष्कर्ष**

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि काल्पनिक साथी बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और रचनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हालांकि, इनका प्रभाव बच्चे के व्यक्तित्व, पारिवारिक वातावरण और सांस्कृतिक संदर्भ पर निर्भर करता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस विषय पर व्यवस्थित और व्यापक अध्ययन की अभी भी आवश्यकता है, विशेषकर विद्यालयी बच्चों पर केंद्रित अनुसंधान।

अनुसंधान कार्यप्रणाली (Research Methodology)

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान डिज़ाइन पर आधारित था, जिसका उद्देश्य बच्चों में काल्पनिक साथियों की उपस्थिति तथा उनके सामाजिक, भावनात्मक और रचनात्मक विकास के बीच संबंध का मूल्यांकन करना था। अनुसंधान का संचालन भोपाल शहर के चयनित निजी एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में किया गया, जहाँ 5 से 8 वर्ष आयु के बच्चों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व उपलब्ध था और जहाँ शोध कार्य के लिए आवश्यक अनुमति प्राप्त की गई थी।

अध्ययन की लक्षित जनसंख्या में 5–8 वर्ष आयु के विद्यालयी बच्चे शामिल थे। कुल 120 बच्चों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना तकनीक के माध्यम से किया गया, जिसमें आयु, लिंग और विद्यालय के प्रकार (सरकारी/निजी) को स्तरीकरण के आधार के रूप में लिया गया। इस पद्धति का उद्देश्य विभिन्न उप-समूहों से प्रतिनिधि डेटा प्राप्त करना था, जिससे निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय और सामान्यीकरण योग्य बन सकें।

डेटा संग्रह हेतु प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया था। प्राथमिक डेटा बच्चों के साथ संरचित गतिविधियों, अवलोकन तथा शिक्षक और अभिभावक साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किया गया। द्वितीयक डेटा पूर्व प्रकाशित शोध-पत्रों, पुस्तकों, रिपोर्टों और ऑनलाइन डेटाबेस से प्राप्त किया गया था, जिससे विषय के संदर्भ और पृष्ठभूमि को सुदृढ़ किया जा सके।

डेटा संग्रह के लिए तीन प्रमुख उपकरण प्रयुक्त किए गए थे। पहला, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए एक संरचित प्रश्नावली, जिसमें बच्चों के व्यवहार, सामाजिक संपर्क और रचनात्मक गतिविधियों से जुड़े प्रश्न सम्मिलित थे। दूसरा, एक अवलोकन सूची, जिसका उपयोग विद्यालय समय के दौरान बच्चों के सामाजिक एवं रचनात्मक व्यवहार के मूल्यांकन में किया गया। तीसरा, चयनित बच्चों और उनके अभिभावकों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार, जिनके माध्यम से काल्पनिक साथियों की प्रकृति और उनकी भूमिका के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई।

डेटा संग्रह प्रक्रिया में सबसे पहले विद्यालय प्रबंधन और अभिभावकों से औपचारिक अनुमति प्राप्त की गई थी। इसके बाद शोधकर्ता ने विद्यालय समय के दौरान बच्चों की दैनिक गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। निर्धारित समय पर अभिभावकों और शिक्षकों से प्रश्नावली भरवाई गई तथा चयनित बच्चों से व्यक्तिगत बातचीत कर प्रासंगिक जानकारी प्राप्त की गई।

अध्ययन के दौरान सभी नैतिक पहलुओं का पालन किया गया था। प्रतिभागियों के अभिभावकों से लिखित सहमति प्राप्त की गई और बच्चों की पहचान को गोपनीय रखा गया। किसी भी रिपोर्ट या प्रकाशन में व्यक्तिगत विवरण का खुलासा नहीं किया गया, तथा सभी गतिविधियों में बच्चों की स्वेच्छा और सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई।

डेटा विश्लेषण में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार की विधियों का उपयोग किया गया था। मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत और औसत के माध्यम से किया गया, जबकि गुणात्मक डेटा का विश्लेषण थीमेटिक एनालिसिस के माध्यम से किया गया, जिसमें प्रमुख विषयों और पैटर्न की पहचान की गई। समस्त सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए SPSS और Microsoft Excel का उपयोग किया गया था।

परिणाम (Results)

इस अध्ययन के परिणाम बच्चों में काल्पनिक साथियों की उपस्थिति और उनके सामाजिक, भावनात्मक तथा रचनात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। कुल 120 बच्चों में से 72 (60%) बच्चों ने बताया कि उनके पास किसी न किसी रूप में काल्पनिक साथी था, जबकि 48 (40%) बच्चों के पास ऐसा कोई साथी नहीं था।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक4, अक्तूबर - दिसंबर 2025

काल्पनिक साथियों की उपस्थिति और लिंग के आधार पर वितरण

काल्पनिक साथियों की उपस्थिति और लिंग के बीच संबंध का मूल्यांकन करने के लिए प्रतिभागियों को दो समूहों–IC वाले और बिना IC वाले बच्चों–में विभाजित किया गया। तालिका 1 में लड़के और लड़कियों में इस प्रवृत्ति का प्रतिशत वितरण दर्शाया गया है।

तालिका 1: काल्पनिक साथियों की उपस्थिति का लिंग के आधार पर वितरण

लिंग	कुल प्रतिभागी (n)	IC वाले बच्चे (%)	बिना IC वाले बच्चे (%)
लड़के	65	36 (55.4%)	29 (44.6%)
लड़कियाँ	55	36 (65.5%)	19 (34.5%)
कुल	120	72 (60%)	48 (40%)

तालिका 1 तालिका से स्पष्ट होता है कि लड़कियों में काल्पनिक साथी रखने की प्रवृत्ति लड़कों की तुलना में अधिक पाई गई (65.5% बनाम 55.4%)। यद्यपि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से मामूली है, फिर भी यह संकेत देता है कि लिंग आधारित सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक बच्चों की कल्पनाशील प्रवृत्तियों को प्रभावित कर सकते हैं।

2. **सामाजिक विका समूह औसत सामाजिक स्कोर** (Mean ± SD) **t-मूल्य p-मूल्यस स्कोर में अंतर**

बच्चों के सामाजिक विकास स्तर का आकलन एक मानकीकृत सामाजिक विकास स्केल के माध्यम से किया गया था। सामाजिक स्कोर 0 से 10 के बीच मापा गया, जिसमें उच्च स्कोर बेहतर सामाजिक कौशल को दर्शाता है। तालिका 2 में IC वाले और बिना IC वाले बच्चों के औसत सामाजिक स्कोर (Mean ± SD) की तुलना प्रस्तुत की गई है।

तालिका 2: काल्पनिक साथियों की उपस्थिति के आधार पर सामाजिक विकास स्कोर की तुलना

समूह	औसत सामाजिक स्कोर (Mean ± SD)	t-मूल्य	p-मूल्य
IC वाले बच्चे	IC वाले बच्चे		
बिना IC वाले बच्चे	6.3 ± 1.5	5.42	0.001

तालिका से स्पष्ट होता है कि IC वाले बच्चों का औसत सामाजिक स्कोर (7.8) बिना IC वाले बच्चों (6.3) की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक था। t-परीक्षण के परिणाम (t = 5.42, p = 0.001) इस अंतर को सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण दर्शाते हैं। यह परिणाम इस धारणा का समर्थन करता है कि काल्पनिक साथी बच्चों के सामाजिक कौशल के विकास में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं।

3. **भावनात्मक विकास स्कोर में अंतर**

बच्चों के भावनात्मक विकास का मूल्यांकन एक मानकीकृत भावनात्मक विकास स्केल का उपयोग करके किया गया, जिसमें 0 से 10 तक के स्कोर दिए गए, जहाँ उच्च स्कोर बेहतर भावनात्मक नियंत्रण और अभिव्यक्ति क्षमता को दर्शाता है।

तालिका 3 में IC वाले और बिना IC वाले बच्चों के औसत भावनात्मक स्कोर की तुलना दी गई है।

समूह	**औसत भावनात्मक स्कोर** (Mean ± SD)	**t-मूल्य**	**p-मूल्य**
IC वाले बच्चे	IC वाले बच्चे		
बिना IC वाले बच्चे	6.7 ± 1.3	6.02	0.000

तालिका 3 से स्पष्ट है कि IC वाले बच्चों का भावनात्मक स्कोर भी उल्लेखनीय रूप से अधिक था। यह परिणाम इस धारणा का समर्थन करता है कि काल्पनिक साथी बच्चों को अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से व्यक्त करने और नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं।

4. **रचनात्मकता स्कोर में अंतर**

बच्चों की रचनात्मकता का मूल्यांकन एक मानकीकृत रचनात्मकता परीक्षण के माध्यम से किया गया था, जिसमें 0 से 10 तक के स्कोर प्राप्त हो सकते थे। उच्च स्कोर बच्चों की कल्पनाशीलता, समस्या-समाधान और नवाचार क्षमता के उच्च स्तर को इंगित करता है। तालिका 4 में IC वाले और बिना IC वाले बच्चों के औसत रचनात्मकता स्कोर की तुलना प्रस्तुत की गई है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक4, अक्तूबर - दिसंबर 2025

तालिका 4: काल्पनिक साथियों की उपस्थिति के आधार पर रचनात्मकता स्कोर की तुलना

समूह	औसत रचनात्मकता स्कोर (Mean ± SD)	t-मूल्य	p-मूल्य
IC वाले बच्चे	IC वाले बच्चे		
बिना IC वाले बच्चे	7.0 ± 1.4	7.11	0.000

तालिका से स्पष्ट है कि IC वाले बच्चों का औसत भावनात्मक स्कोर (8.1) बिना IC वाले बच्चों (6.7) की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक था। t-परीक्षण के परिणाम ($t = 6.02$, $p < 0.001$) दर्शाते हैं कि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह निष्कर्ष इस विचार का समर्थन करता है कि काल्पनिक साथी बच्चों की भावनात्मक अभिव्यक्ति और भावनात्मक नियमन (emotional regulation) में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

5. **अभिभावकों और शिक्षकों की धारणाएँ**

गुणात्मक विश्लेषण से पता चला कि अधिकांश अभिभावक और शिक्षक काल्पनिक साथियों को बच्चों की कल्पनाशक्ति, आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला मानते हैं। हालांकि, कुछ मामलों में, अत्यधिक IC-निर्भरता को एकाग्रता में कमी और वास्तविक-जीवन संपर्क में कमी से जोड़ा गया।

चर्चा (Discussion): **पूर्ववर्ती अध्ययनों के संदर्भ में परिणामों का विश्लेषण**

इस अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों ने संकेत दिया था कि काल्पनिक साथियों (ICs) वाले बच्चों के **सामाजिक**, **भावनात्मक** और **रचनात्मक** स्कोर बिना IC वाले बच्चों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक रहे। यह पैटर्न पूर्ववर्ती साहित्य के साथ व्यापक रूप से संगत रहा। उदाहरणार्थ, सिंगर एवं सिंगर ने यह तर्क दिया था कि कल्पनाशील खेल और काल्पनिक पात्रों के साथ अंतःक्रिया बच्चों के सामाजिक संवाद और सहकारी व्यवहार को प्रोत्साहित करती है; वर्तमान अध्ययन में IC समूह का उच्च सामाजिक स्कोर उसी प्रवृत्ति के अनुरूप रहा। इसी प्रकार, हारिस के कार्यों में बाल-मन में परिप्रेक्ष्य ग्रहण (perspective-taking) और सहानुभूति के विकास पर कल्पनाशीलता के सकारात्मक प्रभाव का उल्लेख किया गया था; हमारे परिणामों ने यह दर्शाया कि IC वाले बच्चों ने भावनात्मक विनियमन और अभिव्यक्ति में तुलनात्मक रूप से श्रेष्ठ प्रदर्शन किया, जो इन निष्कर्षों का समर्थन करता रहा।

रचनात्मकता के संदर्भ में, इस अध्ययन में IC समूह का औसत स्कोर अधिक रहा, जो पूर्व अध्ययनों में पाए गए निष्कर्षों से मेल खाता रहा कि काल्पनिक साथियों के साथ कथानक-निर्माण, भूमिका-अभिनय और प्रतीकात्मक सोच का अभ्यास बच्चों की **विधेयात्मक** (divergent) और **समस्या-समाधान** क्षमताओं को उभारता है। ल्यूट्ज़ और अन्य के निष्कर्षों ने भी यह संकेत किया था कि IC अनुभव ने कथात्मक समृद्धि और वैकल्पिक समाधान-निर्माण को बढ़ावा दिया; इस अध्ययन के रचनात्मकता स्कोर ने उस दिशा में पुष्टिकरण प्रदान किया।

लिंग भिन्नताओं के संदर्भ में, वर्तमान अध्ययन में लड़कियों में IC की उपस्थिति का अनुपात लड़कों की तुलना में थोड़ा अधिक पाया गया था। यह पैटर्न उन अध्ययनों के अनुरूप रहा जो यह सुझाव देते थे कि लड़कियाँ अक्सर सामाजिक-संचार और कथानक-निर्माण गतिविधियों में अधिक संलग्न रही थीं, जिसके कारण IC की रिपोर्टिंग अपेक्षाकृत अधिक रही। हालाँकि, पूर्व साहित्य में इस भिन्नता पर मतैक्य पूर्णतः स्थापित नहीं रहा; कुछ अध्ययनों ने न्यून या अनिर्णायक अंतर भी बताया था। अतः, यहाँ पाए गए लिंग-अंतर को **सांस्कृतिक संदर्भ**, **संवाद शैली** और **माता-पिता/शिक्षक रिपोर्टिंग पूर्वाग्रह** के साथ देखकर सावधानी से व्याख्यायित किया गया।

पूर्व अध्ययनों में यह भी रेखांकित किया गया था कि IC का प्रभाव **सर्वत्र समान** नहीं रहा; यह बच्चे के व्यक्तित्व-गुण (जैसे, स्वाभाविक अंतर्मुखता/बहिर्मुखता), पारिवारिक माहौल, और मीडिया-एक्सपोज़र से निर्भर रहा। वर्तमान अध्ययन ने इन कारकों को प्राथमिक विश्लेषण में नियंत्रित नहीं किया था; फलतः, उच्च स्कोरों को IC अनुभव का **कारणात्मक प्रभाव** घोषित करने के बजाय **संबद्धता** के रूप में देखा गया। यह सावधानी Peterson जैसे आलोचनात्मक अध्ययनों के अनुरूप रही, जिन्होंने अत्यधिक IC-निर्भरता की स्थितियों में एकाग्रता या सामाजिक-वास्तविकता से कटाव की आशंका का उल्लेख किया था। हमारे गुणात्मक निष्कर्षों में कुछ शिक्षकों/अभिभावकों ने अत्यधिक मग्नता की स्थितियाँ बताई थीं; हालाँकि वे प्रकरण सीमित रहे और समग्र पैटर्न सकारात्मक पक्ष में झुका रहा।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में उपलब्ध सीमित साहित्य—जैसे शहरी-ग्रामीण भेद, भाषा-पर्यावरण और कहानी-संस्कृति—ने यह संकेत दिया था कि शहरी संदर्भों में कल्पनाशील सहभागिता के अवसर अधिक रहे। वर्तमान अध्ययन शहरी विद्यालयों में केंद्रित रहा; इसलिए, परिणामों का **बाह्य वैधता** (external validity) ग्रामीण और विविध सांस्कृतिक समूहों पर सीधे लागू नहीं की गई। भविष्य के अनुसंधान में **बहु-स्थलीय** (multi-site) और **संस्कृति-समानांतर** (cross-cultural) डिज़ाइन अपनाए जाने की आवश्यकता रही, ताकि IC के प्रभावों को व्यापक भारतीय परिदृश्य में परखा जा सके।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड3, अंक4, अक्तूबर - दिसंबर 2025

पद्धतिगत दृष्टि से, इस अध्ययन ने प्रश्नावलियों, अवलोकन और अर्ध-संरचित साक्षात्कारों का मिश्रण प्रयुक्त किया था, जिससे त्रिकोणीकरण (triangulation) द्वारा निष्कर्षों की विश्वसनीयता बढ़ी रही। फिर भी, स्व-रिपोर्ट और अभिभावक/शिक्षक रिपोर्ट में संभावित **सामाजिक वांछनीयता** (social desirability) तथा **यादपूर्वाग्रह** (recall bias) उपस्थित रहा। भविष्य के अध्ययनों में **दीर्घकालिक अनुगमन** (longitudinal) और **प्रयोगात्मक/क्वाज़ी-प्रयोगात्मक** डिज़ाइन अपनाए जाने चाहिए थे, ताकि कारणात्मक संबंधों की अधिक मज़बूत जाँच हो सके। साथ ही, मानकीकृत, संस्कृतिसंवेदनशील (culture-fair) स्केलों का उपयोग, तथा IC की **प्रकृति** (अदृश्य साथी बनाम मानवीकृत खिलौना), **आवृत्ति** और **परिस्थिति-विशिष्टता** का सूक्ष्म मापन, प्रभाव की तीव्रता और परास (dose–response) को स्पष्ट कर सकता था।

व्यावहारिक निहितार्थों की दृष्टि से, वर्तमान निष्कर्ष शिक्षा और परामर्श के क्षेत्र में सार्थक रहे। कक्षा में **निर्देशित कल्पनाशील गतिविधियाँ**, **कहानी-निर्माण कार्य**, और **भूमिका-अभिनय** को संरचित रूप में सम्मिलित किया जाना बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL) को सुदृढ़ कर सकता था। अभिभावकों के लिए, IC अनुभव को **रचनात्मक सहारा** (scaffold) के रूप में देखना, न कि समस्या के रूप में, अधिक लाभकारी रहा–विशेषकर तब जब वयस्क बच्चे की कल्पना का सम्मान करते हुए **यथार्थ–कल्पना सीमाओं** के बारे में सौम्य और स्पष्ट संवाद बनाए रखते थे।
समग्रतः, वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों ने पूर्ववर्ती साहित्य में वर्णित सकारात्मक प्रभावों की पुष्टि की थी और यह संकेत दिया था कि IC अनुभव बाल विकास के कई आयामों में सहायक रहा। साथ ही, आलोचनात्मक अध्ययनों द्वारा सुझाई गई सावधानियों को ध्यान में रखते हुए, परिणामों की व्याख्या **संदर्भ-संवेदी** और **कारणात्मक दावे से बचती हुई** रखी गई। भविष्य के व्यवस्थित और विविध-प्रसंगीय अध्ययनों से इस क्षेत्र में उच्च-गुणवत्ता के साक्ष्य उपलब्ध कराए जा सकते थे, जिससे नीतिगत और शैक्षिक निर्णयों को अधिक सुदृढ़ आधार मिल सके।

निष्कर्ष (Conclusion)

इस अध्ययन ने यह उजागर किया था कि काल्पनिक साथियों (Imaginary Companions – ICs) की उपस्थिति बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और रचनात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं में उल्लेखनीय रूप से सकारात्मक जुड़ाव रखती थी। परिणामों से स्पष्ट हुआ था कि IC वाले बच्चों ने औसत सामाजिक संवाद, सहानुभूति, भावनात्मक नियंत्रण तथा रचनात्मकता स्कोर में बिना IC वाले बच्चों की तुलना में उच्च प्रदर्शन किया था। यह प्रवृत्ति पूर्ववर्ती शोधों के साथ संगत रही, जिनमें कल्पनाशील सहभागिता को बाल विकास का एक महत्त्वपूर्ण साधन माना गया था।
लिंग-आधारित विश्लेषण से पता चला था कि लड़कियों में IC की उपस्थिति अपेक्षाकृत अधिक थी, यद्यपि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सीमित महत्व का रहा। गुणात्मक निष्कर्षों ने संकेत दिया था कि अभिभावक और शिक्षक सामान्यतः IC अनुभव को बच्चों की आत्म-अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास के विकास में सहायक मानते थे, जबकि कुछ मामलों में अत्यधिक IC-निर्भरता को ध्यान-भंग या सामाजिक अलगाव के साथ जोड़ा गया था।

इन निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता था कि काल्पनिक साथी, यदि संतुलित रूप से पोषित किए जाएँ, तो वे बच्चों के **सामाजिक-भावनात्मक अधिगम** और **रचनात्मक विकास** के लिए एक प्रभावी उपकरण सिद्ध हो सकते थे। यह न केवल मनोविज्ञान बल्कि शिक्षा, परामर्श और पालन-पोषण की रणनीतियों के लिए भी प्रासंगिक था।

हालाँकि, अध्ययन की सीमाएँ–जैसे सीमित भौगोलिक क्षेत्र, सांस्कृतिक विविधता का अभाव और कारणात्मक विश्लेषण के लिए उपयुक्त डिज़ाइन का न होना–परिणामों की सामान्यीकरण क्षमता को प्रभावित कर सकती थीं। भविष्य के शोध में व्यापक नमूना, बहु-स्थलीय और दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक रहेगा, ताकि IC के प्रभाव को अधिक सटीक और संदर्भ-संवेदी रूप से समझा जा सके।

समग्रतः, यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि बाल विकास की प्रक्रिया में कल्पना-आधारित अनुभव, विशेषकर काल्पनिक साथी, एक ऐसा प्राकृतिक और समृद्ध साधन हो सकते थे जो बच्चों को न केवल रचनात्मक और भावनात्मक रूप से सक्षम बनाते थे, बल्कि उन्हें सामाजिक रूप से भी अधिक संवेदनशील और अनुकूलनशील बनाते थे।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, आर., एवं मिश्रा, एस. (2019). प्री-स्कूल बच्चों में भाषा विकास: कल्पनाशील खेल की भूमिका. *भारतीय बाल मनोविज्ञान पत्रिका*, 14(2), 45–53.
2. हैरिस, पी. एल. (2000). *कल्पना का कार्य*. माल्डेन, एम.ए.: ब्लैकवेल पब्लिशिंग.
3. ल्यूट्ज़, एम. (2009). काल्पनिक साथियों और बच्चों की रचनात्मकता: एक कथात्मक विश्लेषण. *रचनात्मक व्यवहार पत्रिका*, 43(2), 83–101. https://doi.org/10.1002/j.2162-6057.2009.tb01307.x
4. पीटरसन, सी. (2014). अत्यधिक कल्पना? बच्चों में बार-बार काल्पनिक साथियों के सामाजिक प्रभाव. *बाल विकास अनुसंधान*, 2014, लेख ID 918236. https://doi.org/10.1155/2014/918236

5. शर्मा, पी. (2016). ग्रामीण और शहरी प्री-स्कूल बच्चों में कल्पनाशील खेल का तुलनात्मक अध्ययन. *भारतीय शैक्षिक समीक्षा*, 54(1), 23–35.
6. सिंगर, डी. जी., एवं सिंगर, जे. एल. (1990). *कल्पना का घर: बच्चों का खेल और विकसित होती कल्पना.* कैम्ब्रिज, एम.ए.: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. स्मिथ, पी. के., एवं लॉयड, बी. (2002). प्रारंभिक बचपन में काल्पनिक खेल, कल्पना और रचनात्मकता: एक अंत:सांस्कृतिक समीक्षा. *प्रारंभिक बाल विकास और देखभाल*, 172(2), 131–137. https://doi.org/10.1080/03004430210884
8. टेलर, एम. (1999). *काल्पनिक साथी और उन्हें रचने वाले बच्चे.* न्यूयॉर्क, एन.वाई.: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. वॉटसन, के. (2011). बचपन में काल्पनिक मित्र: सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास से संबंध. *बाल मनोविज्ञान और मनोरोग समीक्षा*, 6(2), 68–75. https://doi.org/10.1111/j.1469-7610.2011.02425.x